अध्याय 56.
गुणस्थान

1. गुणस्थान किसे कहते हैं ?

मोह और योग के निमित्त से होने वाले आत्मा के परिणामों में प्रतिक्षण होने वाले उतार-चढ़ाव को गुणस्थान कहते हैं। (जीवकाण्ड, 3)

2. गुणस्थान कितने होते हैं ?

जीवों के परिणाम यद्यपि अनन्त हैं परन्तु उन सभी को चौदह श्रेणियों में विभाजित किया है, अतः गुणस्थान चौदह होते हैं-1. मिथ्यात्व, 2. सासादन, 3.मिश्र या सम्यग्मिथ्यात्व, 4.अविरत सम्यक्त्व, 5.देशविरत या संयमासंयम, 6. प्रमत्तविरत, 7. अप्रमत्तविरत, 8. अपूर्वकरण,9. अनिवृत्तिकरण,10. सूक्ष्म - साम्पराय, 11. उपशान्तमोह, 12. क्षीणमोह, 13. सयोगकेवली, 14. अयोगकेवली।

(जीवकाण्ड, 9,10)

3. मिथ्यात्व गुणस्थान किसे कहते हैं ?

मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से होने वाले तत्त्वार्थ के अश्रद्धारूप परिणामों को मिथ्यात्व गुणस्थान कहते हैं। (जी.का.,15) इन परिणामों से युक्त जीवों को मिथ्यादृष्टि कहते हैं। इसके दो भेद हैं (अ) स्वस्थान मिथ्यादृष्टि (ब) सातिशय मिथ्यादृष्टि। जो जीव मिथ्यात्व में ही रचपच रहा है, उसे स्वस्थान मिथ्यादृष्टि कहते हैं एवं सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के सम्मुख जीव के जो अधःकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण रूप परिणाम होते हैं, उसे सातिशय मिथ्यादृष्टि कहते हैं।

4. सासादन गुणस्थान किसे कहते हैं ?

1. प्रथमोपशम सम्यक्त्व अथवा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के काल में कम-से-कम एक समय और अधिक-से-अधिक छः आवली शेष रहने पर अनन्तानुबन्धी कषाय के चार भेदों में से किसी एक कषाय के उदय होने से उपशम सम्यक्त्व से च्युत होने पर और मिथ्यात्व प्रकृति के उदय न होने से मध्य के काल में जो परिणाम होते हैं, उसे सासादन गुणस्थान कहते हैं। (जी.का.,19)
2. उपशम सम्यक्त्व से पतित होकर जीव जब तक मिथ्यात्व गुणस्थान में नहीं आता तब तक उसे सासादन सम्यग्दृष्टि कहते हैं। इस गुणस्थान का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट से छः आवली है।

नोट - इस गुणस्थान में उपशम सम्यग्दृष्टि ही आता है।

5. सम्यग्मिथ्यात्व या मिश्र गुणस्थान किसे कहते हैं ?

1. जिस गुणस्थान में सम्यक् और मिथ्यारूप मिश्रित श्रद्धान पाया जाए, उसे सम्यग्मिथ्यात्व या मिश्र गुणस्थान कहते हैं। (श्री धवला, पु. 1/11/167)

2. दाल और चावल के मिश्रित स्वाद के समान सम्यक्त्व और मिथ्यात्व से मिश्रित भाव को सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं।
3. सम्यग्मिथ्यात्व के उदय से जीव का तत्त्व के विषय में श्रद्धान और अश्रद्धान भाव युगपत् होता है, इसलिए इसे मिश्रभाव या मिश्रगुणस्थान कहते हैं।

विशेष -

1. सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में मारणान्तिक समुद्घात नहीं होता है।
2. सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में मरण नहीं होता है।
3. सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में आयुबन्ध भी नहीं होता है।
4. सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान का काल अन्तर्मुहूर्त है।
5. सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान वाला संयम को भी प्राप्त नहीं कर सकता है।

6. अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान किसे कहते हैं ?

जहाँ सम्यग्दर्शन तो प्रकट हो गया हो किन्तु किसी भी प्रकार का व्रत (संयमासंयम या सकल संयम) न हुआ हो, उसे असंयत सम्यग्दृष्टि या अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान कहते हैं। (श्री धवला, 1/12/172)

7. देशविरत या संयमासंयम गुणस्थान किसे कहते हैं ?

इस गुणस्थान का धारक एक ही समय में संयत और असंयत दोनों होता है। वह श्रावक त्रसहिंसा से विरत होने से संयत है और स्थावर हिंसा से विरत न होने से असंयत है, अतः उसे देशविरत या संयमासंयम गुणस्थान कहते हैं। (श्री धवला, 1/13/174-175)

8. प्रमत्तविरत गुणस्थान किसे कहते हैं ?

जहाँ सकल संयम प्रकट हो गया है किन्तु संज्वलन कषाय का तीव्र उदय होने से प्रमाद हो, उसे प्रमत्तविरत गुणस्थान कहते हैं। (श्री धवला, 1/14/176)

9. अप्रमत्तविरत गुणस्थान किसे कहते हैं ?

जहाँ संज्वलन कषाय का मन्द उदय हो जाने से प्रमाद नहीं रहा उस परिणाम को अप्रमत्तविरत गुणस्थान कहते हैं। (श्री धवला, 1/15/179)

10. अप्रमत्तविरत गुणस्थान के कितने भेद हैं ?

अप्रमत्तविरत गुणस्थान के दो भेद हैं -स्वस्थान अप्रमत्तविरत एवं सातिशय अप्रमत्तविरत। जो सातवें गुणस्थान से छटवें में और छटवें गुणस्थान से सातवें में आते-जाते रहते हैं, उनको स्वस्थान अप्रमत्तविरत कहते हैं। जो उपशम अथवा क्षपक श्रेणी के सम्मुख होकर अधःप्रवृत्त करण रूप परिणाम करते हैं, उनको सातिशय अप्रमत्तविरत कहते हैं। (जीवकाण्ड, 46-47)

11. अधःप्रवृत्तकरण किसे कहते हैं ?

जहाँ सम-समयवर्ती जीवों के परिणाम भिन्न-समयवर्ती जीवों के परिणामों से समान और असमान दोनों प्रकार के होते हैं, उन्हें अधःप्रवृत्तकरण कहते हैं। इन अधःप्रवृत्तकरण परिणामों की अपेक्षा अप्रमत्तविरत

गुणस्थान का अपर नाम अधःकरण भी है। (जै. सि. को., 2/7)

12. अपूर्वकरण गुणस्थान किसे कहते हैं ?

इस गुणस्थान में सम-समयवर्ती जीवों के परिणाम समान-असमान दोनों होते हैं, किन्तु भिन्न समय में रहने वाले जीव के परिणाम भिन्न ही होते हैं। यहाँ मुनिराज पूर्व में कभी भी प्राप्त नहीं हुए थे, ऐसे अपूर्व परिणामों को धारण करते हैं इसलिए इस गुणस्थान का नाम अपूर्वकरण गुणस्थान है।
(श्री धवला, 1/16/181)

13. अनिवृत्तिकरण गुणस्थान किसे कहते हैं ?

अनिवृत्तिकरण के अन्तर्मुहूर्त काल में से किसी एक समय में रहने वाले अनेक जीव जिस प्रकार शरीर के आकार आदि से परस्पर में भिन्न-भिन्न होते हैं, किन्तु उनके परिणामों में भेद नहीं पाया जाता है,उसे अनिवृत्तिकरण गुणस्थान कहते हैं। (जीवकाण्ड, 57)

तीनों करण के उदाहरण निम्नलिखित हैं -

1. **अधःकरण का उदाहरण** -1 बजे तीन मुनिराजों ने विहार किया। वे गति की अपेक्षा से आगे-पीछे हो जाते हैं। एक तो सबसे आगे बढ़ गए तथा एक पीछे रह गए तथा एक उनसे भी पीछे रह गए। इस प्रकार तीन भेद हो जाते हैं।

   1 बजकर 5 मिनट पर फिर तीन मुनिराजों ने विहार किया, उनमें से एक की तीव्रगति होने पर वह 1 बजे निकले मुनिराजों में जो सबसे आगे थे उन तक तो नहीं पहुँच पाते लेकिन बीच में जो मुनिराज थे उनकी बराबरी कर लेते हैं और एक जो पीछे वाले थे, एक उनके साथ हो जाते हैं और एक उनसे भी पीछे रह जाते हैं।

   1 बजे निकले थे और जो 1 बजकर 5 मिनट पर निकले थे उनकी समानता मिल गई। इसी प्रकार जिन्होंने पहले अधःकरण को प्राप्त किया उनकी विशुद्धि कम थी और जिन्होंने बाद में अधःकरण को प्राप्त किया उनकी विशुद्धि अधिक थी तो पहले वाले के बराबर हो जाए उनसे मिल जाए, उसे अधःकरण कहते हैं।

2. **अपूर्वकरण का उदाहरण** - जैसे-तीन मुनिराजों ने 1 बजे विहार किया और उनमें से एक आगे निकल गए, एक बीच में रह गए तथा एक उनसे भी पीछे रह गए अर्थात् एक समयवर्ती जीवों के परिणामों में तारतम्यता पाई जाती है। किन्तु 1 बजकर 5 मिनट पर जो तीन मुनिराजों ने विहार किया तो वे भी आगे पीछे हो गए लेकिन कितनी भी तीव्रगति से चले तो भी पहले वाले (1 बजे विहार करने वाले) की बराबरी नहीं कर पाएंगे अर्थात् भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणामों में असमानता ही पाई जाती है।

3. **अनिवृत्तिकरण का उदाहरण** - 1 बजे तीन मुनिराजों ने विहार किया, वे सब एक साथ ही रहे आगे पीछे नहीं हुए और 1 बजकर 5 मिनट पर जिन तीन मुनिराजों ने विहार किया तो वे भी आगे पीछे न होकर एक साथ ही रहे। अतः अनिवृत्तिकरण में एक समयवर्ती जीवों के परिणामों में

समानता और पूर्वोतर समयवर्ती जीवों के परिणामों में असमानता ही होती है।

14. ये तीन करण कहाँ-कहाँ होते हैं ?

1. प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त करते समय।
2. द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त करते समय।
3. अन्तानुबन्धी की विसंयोजना करते समय।
4. चारित्र मोहनीय का उपशम करते समय।
5. चारित्र मोहनीय का क्षय करते समय।
6. क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त करते समय। किन्तु क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक चारित्र एवं संयमासंयम से पूर्व आदि के दो करण होते हैं।

15. करण किसे कहते हैं ?

जिस परिणाम विशेष के द्वारा उपशमादि रूप विवक्षित भाव उत्पन्न किया जाता है, वह परिणाम करण कहलाता है। अथवा परिणाम को करण कहते हैं। (श्री धवला, पु. 1/1/181)

16. सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान किसे कहते हैं ?

जिस गुणस्थान में संज्वलन लोभ कषाय का अत्यन्त सूक्ष्म उदय होता है, उसे सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान कहते हैं। सूक्ष्म = छोटा, साम्पराय=कषाय। (जीवकाण्ड, 59)

17. उपशांत मोह गुणस्थान किसे कहते हैं ?

समस्त मोहनीय कर्म के उपशम से उत्पन्न होने वाले गुणस्थान को उपशांत मोह गुणस्थान कहते हैं। (श्री धवला, पु. 1/19/189)

18. क्षीण मोह गुणस्थान किसे कहते हैं ?

समस्त मोहनीय कर्म के क्षय से उत्पन्न आत्मा का विशुद्ध परिणाम क्षीण मोह गुणस्थान कहलाता है। (श्री धवला, पु. 1/20/190)

19. सयोग केवली गुणस्थान किसे कहते हैं ?

चार घातिया कर्मों के क्षय हो जाने से जहाँ अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख व अनन्त वीर्य प्रकट हो जाते हैं, उन्हें केवली कहते हैं और उनके जब तक योग रहता है, तब तक उन्हें सयोग केवली कहते हैं। (राजवार्तिक, 9/1/24)

20. अयोग केवली गुणस्थान किसे कहते हैं ?

सयोग केवली के जब योग नष्ट हो जाते हैं एवं जब तक शरीर से मुक्त नहीं होते हैं, तब तक इनको अयोग केवली कहते हैं। अयोग केवली का काल 5 ह्रस्व अक्षर (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) बोलने में जितना समय लगता है, उतना ही है। इनके उपान्त्य समय में 72 एवं अन्तिम समय में 13 प्रकृतियों का क्षय हो जाता है। (राजवार्तिक, 9/1/24)

21. किस गुणस्थान वाला जीव कौन-कौन-से गुणस्थानों में जा सकता है ?

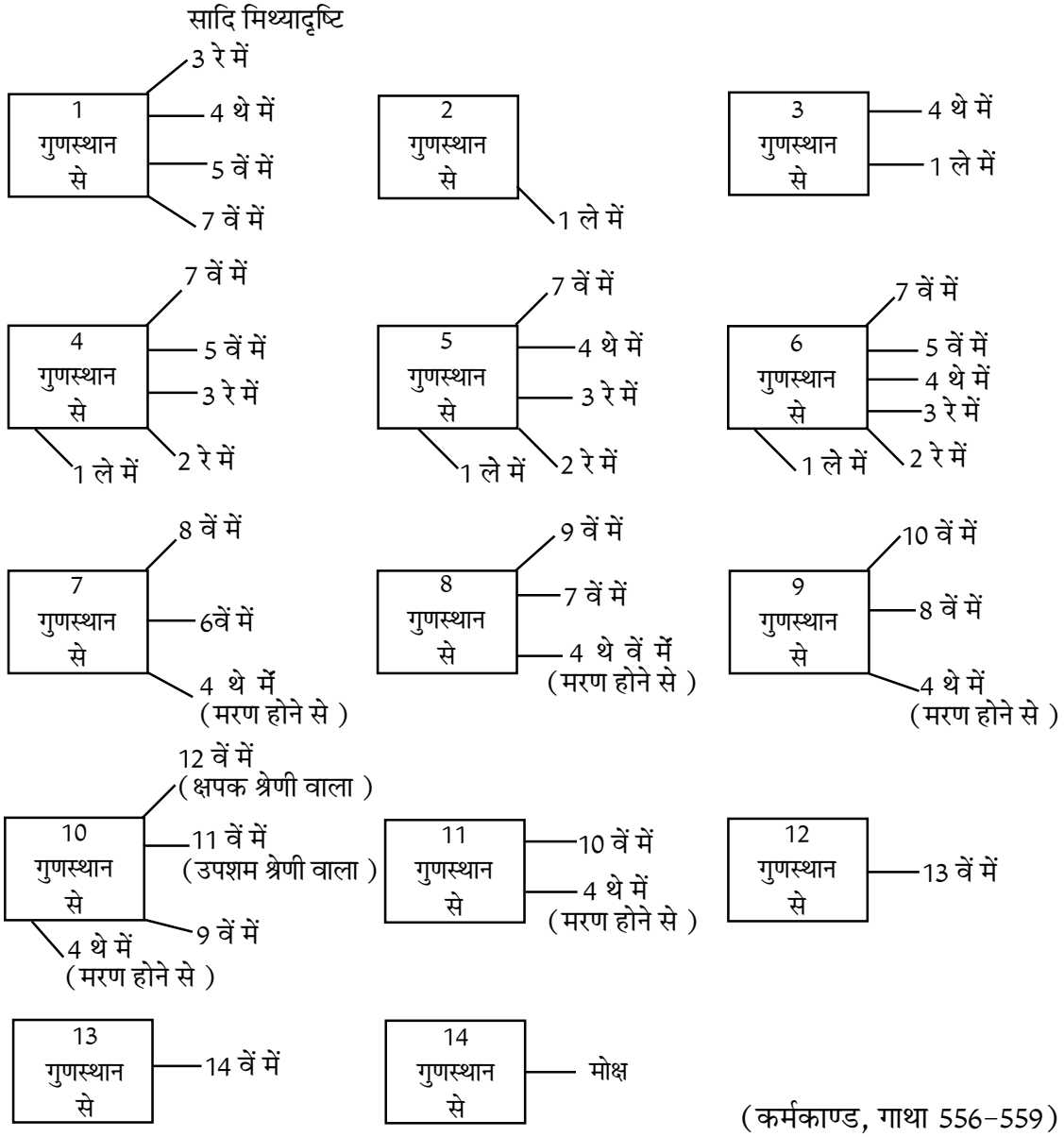

(कर्मकाण्ड, गाथा 556-559)

22. उपशम श्रेणी किसे कहते हैं ? इसमें कितने गुणस्थान होते हैं एवं उपशम श्रेणी एक जीव कितने बार चढ़ सकता है ?

जहाँ चारित्र मोहनीय कर्म का उपशम करता हुआ जीव आगे बढ़ता है, वह उपशम श्रेणी है। इसमें 8, 9,10,11 गुणस्थान होते हैं। उपशम श्रेणी वाले ही नीचे के गुणस्थानों में आते हैं एवं मरण भी उपशम श्रेणी वालों का होता है। उपशम श्रेणी अधिक से अधिक चार बार चढ़ सकते हैं किन्तु एक भव में दो बार से अधिक नहीं चढ़ सकते हैं। पाँचवीं बार यदि चढ़ेगा तो नियम से क्षपक श्रेणी ही चढ़ेगा। (राजवार्तिक, 9/1/18)

23. क्षपक श्रेणी किसे कहते हैं, इसमें कितने गुणस्थान होते हैं एवं क्षपक श्रेणी कितने बार चढ़ सकते हैं ?

जहाँ चारित्रमोहनीय कर्म का क्षय करता हुआ जीव आगे बढ़ता है वह क्षपक श्रेणी होती है। इसमें 8, 9,10 एवं 12 वां गुणस्थान होता है। इसमें मरण नहीं होता है एवं जीव एक ही बार क्षपक श्रेणी चढ़ता है और मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। (राजवार्तिक, 9/1/18)

24. अनादि मिथ्यादृष्टि किसे कहते हैं ?

जिसने अभी तक सम्यग्दर्शन को प्राप्त नहीं किया है, उसे अनादि मिथ्यादृष्टि कहते हैं।

25. सादि मिथ्यादृष्टि किसे कहते हैं ?

जिसने एक बार सम्यग्दर्शन को प्राप्त कर लिया है एवं पुनः मिथ्यात्व में आ गया है, वह सादि मिथ्यादृष्टि है। अनादि मिथ्यादृष्टि प्रथम गुणस्थान से 4, 5 एवं 7 वें गुणस्थान में जाता है एवं सादि मिथ्यादृष्टि प्रथम गुणस्थान से 3, 4, 5 एवं 7 वें गुणस्थान में जाता है।

26. एक जीव की अपेक्षा कौन से गुणस्थान का कितना काल है ?

क्र.	गुणस्थान	जघन्य काल	उत्कृष्ट काल
1.	मिथ्यात्व	अन्तर्मुहूर्त	अनादि अनंत, अनादि सांत और सादि सांत
2.	सासादन	एक समय	6 आवली
3.	मिश्र या सम्यग्मिथ्यात्व	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
4.	अविरत सम्यक्त्व	अन्तर्मुहूर्त	एक समय कम 33 सागर एवं 9 अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि
5.	देशविरत या संयमासंयम	अन्तर्मुहूर्त	एक पूर्व कोटि में 3 अन्तर्मुहूर्त कम
6.	प्रमत्तविरत	एक समय (मरण की अपेक्षा)	अन्तर्मुहूर्त
7.	अप्रमत्तविरत	,,	अन्तर्मुहूर्त
8.	अपूर्वकरण	,,	अन्तर्मुहूर्त
9.	अनिवृत्तिकरण	,,	अन्तर्मुहूर्त
10.	सूक्ष्म साम्पराय	,,	अन्तर्मुहूर्त
11.	उपशान्तमोह	,,	अन्तर्मुहूर्त
12.	क्षीण मोह	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
13.	सयोग केवली	,,	1 पूर्व कोटि में 8 वर्ष व 8 अन्तर्मुहूर्तकम
14.	अयोग केवली	,,	अन्तर्मुहूर्त

(श्री धवला, पु. 4/5/3-32/324-357)

विशेष- जघन्य और उत्कृष्ट काल के बीच का समय मध्यम काल कहलाता है।

27. मरण किन-किन जीवों के नहीं होता है ?

सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में, निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था को धारण करने वाले मिश्रकाययोगी, क्षपकश्रेणी में, उपशम श्रेणी चढ़ते हुए अपूर्वकरण गुणस्थान के प्रथम भाग में, प्रथमोपशम सम्यक्त्व में, तेरहवें गुणस्थान में, सप्तम पृथ्वी (नरक) के द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ गुणस्थान में, अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना करके मिथ्यात्व गुणस्थान को प्राप्त होने वाले जीव अन्तर्मुहूर्त तक मरण को प्राप्त नहीं होते हैं एवं कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि का मरण नहीं होता है। जिसने अनन्तानुबन्धी चतुष्क, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व का क्षय कर दिया है एवं सम्यक् प्रकृति का अनन्त बहुभाग क्षय कर दिया है, उसे कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टि कहते हैं। आचार्य श्री नेमीचन्द्र जी (लब्धिसार ग्रन्थ) के अनुसार कृतकृत्य वेदक का मरण होता है। (कर्मकाण्ड, 560-561)

28. किस गुणस्थान में कितने जीव हैं ?

1. प्रथम गुणस्थान में अनन्तानन्त जीव हैं। (श्री धवला, पु. 3/2/10)
2. द्वितीय गुणस्थान में पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव हैं।
3. तृतीय गुणस्थान में पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव हैं।
4. चतुर्थ गुणस्थान में पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव हैं।
5. पञ्चम गुणस्थान में पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव हैं। (श्री धवला, पु. 3/6/63)

29. मनुष्यगति के किस गुणस्थान में उत्कृष्ट से कितने जीव हो सकते हैं।

1. प्रथम गुणस्थान में	–	असंख्यात
2. द्वितीय गुणस्थान में	–	52 करोड़
3. तृतीय गुणस्थान में	–	104 करोड़
4. चतुर्थ गुणस्थान में	–	700 करोड़
5. पञ्चम गुणस्थान में	–	13 करोड़
6. छटवें गुणस्थान में	–	5,93,98,206
7. सातवें गुणस्थान में	–	2,96,99,103
8. उपशम श्रेणी के अष्टम गुणस्थान में	–	299
नवमे गुणस्थान में	–	299
दसवें गुणस्थान में	–	299
ग्यारहवें गुणस्थान में	–	299
9. क्षपक श्रेणी के अष्टम गुणस्थान में	–	598
नवमे गुणस्थान में	–	598
दसवें गुणस्थान में	–	598
बारहवें गुणस्थान में	–	598
10. तेरहवें गुणस्थान में	–	8,98,502
11. चौदहवें गुणस्थान में	–	598
छटवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक के जीवों की कुल संख्या	–	8,99,99,997

विशेष- कुल मनुष्यों की संख्या, असंख्यात है, वह सम्मूर्छन की अपेक्षा से है। गर्भज मनुष्यों की संख्या 29 अङ्क प्रमाण है। उपशम श्रेणी के प्रत्येक गुणस्थान में 299, 300 एवं 304 जीव भी होते हैं एवं इससे दुगुने क्षपक श्रेणी के प्रत्येक गुणस्थान में 598, 600 एवं 608 जीव भी होते हैं एवं चौदहवें गुणस्थान में भी क्षपक श्रेणी के किसी भी गुणस्थान के समान 598, 600 एवं 608 जीव भी होते हैं। ऐसी तीन मान्यताएँ हैं। (श्री धवला, पु. 3/40/244-252 एवं 3/7/89-3/13/95-97)

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. सादि मिथ्यादृष्टि प्रथम गुणस्थान से तृतीय गुणस्थान में भी जा सकता है।
2. चतुर्थ गुणस्थानवर्ती क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि भी द्वितीय गुणस्थान में आता है।
3. तृतीय गुणस्थान में मरण नहीं होता है।
4. प्रथम गुणस्थान से डायरेक्ट सप्तम गुणस्थान में भी जा सकते हैं।
5. चतुर्थ गुणस्थान से छटवें गुणस्थान में जा सकते हैं।
6. क्षपक श्रेणी के दसवें गुणस्थान का जघन्य काल एक समय है।
7. अयोग केवली का काल अन्तर्मुहूर्त है।
8. क्षपक श्रेणी में तेरहवाँ गुणस्थान भी पाया जाता है।
9. अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में सभी जीवों की आयु एक-सी रहती है।
10. छटवें गुणस्थान से डायरेक्ट प्रथम गुणस्थान में आ सकते हैं।

अन्यत्र खोजिए -

1. प्रथम गुणस्थान में बन्ध योग्य, उदय योग्य एवं सत्त्व योग्य कुल कितनी-कितनी प्रकृतियाँ हैं ?
2. छटवें गुणस्थान में किन-किन प्रकृतियों की बन्ध से व्युच्छित्ती होती है ?
3. किन-किन गुणस्थानों को प्राप्त किए बिना मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं ?